# बालश्रम समाज के लिए एक अभिशाप

**डॉ० अरूण प्रसाद अमन**

वर्तमान समय में भारत ही नहीं अपितु पूरा विश्व बाल मजदूरी की समस्या से ग्रस्त है। बालश्रम भारत के साथ–साथ पूरे विश्व के लिए एक ज्वलंत समस्या बनती जा रही है। जैसे–जैसे सरकारें नये–नये रूपों में और अधिक सामने आती जा रही है। सस्ते श्रमिक की चाहत में छोटे से लेकर बड़े से बड़े उद्योगपति भी बाल श्रम से अपना मोह छोड़ नहीं पा रहे है लेकिन नये–नये कानून बनाकर भी सरकार इसे रोक पाने में असफल रही है। कारण सरकार कानून तो बना रही है लेकिन उन कानूनों को लागू करवाने में सरकारी कठोरता का अभाव देखा जा सकता है। आज दुनिया में 215 मिलियन ऐसे बच्चे है जिनकी उम्र 14 वर्ष से कम है और इन बच्चों का समय स्कूल में कॉपी–किताबों और दोस्तों के बीच नहीं बल्कि होटलों, उद्योगों में बर्त्तन एवं झाड़ू–पोंछे और औजारों के साथ बितता है। भारत में तो यह स्थिति बहुत ही भयावह हो चली है। दुनिया में सबसे ज्यादा बाल मजदूर भारत में ही है। 1991 में यह आंकड़ा 11.3 मिलियन तक था जो 2001 की जनगणना में 12.7 मिलियन तक पहुँच चुका है।